भोजन और आजीविका की सुरक्षा के लिए जल संरक्षण जरूरी
केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा ''विश्व जल दिवस'' का आयोजन

झॉसी 22 मार्च, 2021। केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झॉसी के तत्वाधान में बबीना ब्लाक के परासई गॉव में ''विश्व जल दिवस'' का आयोजन किया गया। ज्ञात हो कि प्रतिवर्ष 22 मार्च को ''विश्व जल दिवस'' मनाया जाता है, इसका उद्देश्य विश्व के सभी विकसित देशों में स्वच्छ एवं सुरक्षित जल की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना है, साथ ही यह जल संरक्षण के महत्व पर भी ध्यान केन्द्रित करता है। इस कार्यक्रम के शुरूआत से ही विश्व जल दिवस पर वैश्विक संदेश फैलाने के लिए थीम (विषय) का चुनाव करने के साथ ही विश्व जल दिवस को मनाने की सारी जिम्मेदारी संयुक्त राष्ट्र को पर्यावरण तथा विकास एजेन्सी की है। वर्ष 2021 के विश्व जल दिवस का विषय ''वेल्यूइंग वाटर'' अर्थात् पानी को महत्व देना है। इसी सन्देश को लेकर केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झॉसी द्वारा ''नमी संरक्षण में वृक्षों की भूमिका'' विषय के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. ए. अरूणाचलम के निर्देशन में संस्थान के वैज्ञानिकों की टीम के साथ परासई गॉव में विश्व जल दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में परासई के आस–पास स्थित गॉवों के लगभग 200 किसानों एवं उनके परिवारजनों ने भागीदारी की। कार्यक्रम के गॉव में आयोजित करने का उद्देश्य था कि इस आयोजन में अधिक से अधिक भागीदारी द्वारा जल के महत्व को ग्रामीण लोगों तक पहुॅचाया जा सके।

कार्यक्रम के दौरान कृषकों को सम्बोधित करते हुए संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. इन्दर देव ने कृषिवानिकी के अन्तर्गत विभिन्न शस्य क्रियाओं द्वारा नमी को भूमि में कैसे संरक्षित रखे, इस पर विस्तृत प्रकाश डाला। डा. आर.के.तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा नमी संरक्षण हेतु मेड़–बन्धी, ढ़ाल के विपरीत जुताई, ढालू खेतों में पेड़ों के अर्द्ध चन्द्राकार थाले बनाना, फल वृक्षों में गर्मी के मौसम में थालों में घास–फूॅस तथा फसल अवशेषों की पलवार बिछाना, वर्षा जल के थालों में संरक्षण हेतु थालों को जमीन की सतह से गहरा रखना तथा उनमें कंकड़ों की पलवार/परत बिछाना, अत्यन्त ढ़ालू क्षेत्रों में पानी के संरक्षण हेतु एकान्तर खाई खोदना आदि के बारे में विस्तृत रूप से किसानों से चर्चा की।

संस्थान के निदेशक डा. ए. अरूणाचलम ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में जल के महत्व को विस्तृत रूप से रेखांकित किया। ''जल ही जीवन है'' के अर्थ को समझाते हुए उन्होंने बताया कि समस्त जीवित प्राणियों की उत्पत्ति जल में हुयी है, जल के बिना जीवन सम्भव नही है, इसी कारणवश अधिकांश संस्कृतियॉ एवं आबादी नदियों के किनारे विकसित हुयी हैं। बढ़ती आबादी और इसके परिणामस्वरूप बढ़ते औद्योगिकीकरण के कारण पानी की खपत में निरन्तर वृद्धि हो रही है। प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन के कारण प्रकृति में असन्तुलन पैदा हो गया है। मौसम परिवर्तन की आहट उसी का परिणाम है। संयुक्त राष्ट्र की विश्व जल

विकास रिपोर्ट ने चेतावनी दी है कि जलवायु परिवर्तन से पानी की उपलब्धता पर प्रभाव पड़ना निश्चित है। वर्षा की अस्थिरता और विशेषरूप से इसकी तीव्रता, बरसने की अवधि और बार–बार बरसने की आवृत्ति से कृषि उत्पादकता प्रभावित होती है। स्थिति इतनी भयावह हो रही है कि वैज्ञानिक अब पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रहों पर पहले पानी की खोज को प्राथमिकता देते हैं।

जल प्रबन्धन कार्यों के लिए कृषिवानिकी की बहुत बड़ी भूमिका है। कृषिवानिकी की विभिन्न विधाओं के अन्तर्गत लगाये गये पेड़ों के छत्र वर्षा की बून्दो के वेग को कम करके, मृदा कटाव को रोकते हैं, साथ ही सहयोगी फसलें वर्षा जल के बहाव में अवरोध उत्पन्न करके पानी को भूमि में अवशोषित होने तथा मृदा कणों के बहाव को रोकते हैं। संस्थान ने वर्ष 2011 में ग्राम परासई में कृषिवानिकी आधारित जलागम क्षेत्र के विकास पर कार्य प्रारम्भ किया था, जिसके अन्तर्गत किसानों के खेतों पर कृषिवानिकी पद्धतियों के अन्तर्गत विभिन्न फल एवं बहुउद्देशीय वृक्षों का रोपण किया गया। इस जलागम विकास कार्यकम के अर्न्तगत कई चैकडैम का निर्माण एवं एक हवेली का जीर्णोद्धार कर पुनर्जीवित किया गया। संस्थान के द्वारा किये गये उक्त कार्यों से क्षेत्र के जल स्रोतों में वर्ष भर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित हुयी है तथा क्षेत्र के किसान अब वर्ष भर विभिन्न फसलें अपने खेतों में उपजा रहे हैं। इस जलागम क्षेत्र को नीति आयोग द्वारा वर्ष 2018 में ''वेस्ट वाटर प्रेक्टिसिस'' के रूप में घोषित किया गया है तथा इसी वर्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा अपने स्थापना दिव के अवसर पर कृषि एवं उससे सम्बद्ध विषयों के अन्तर्गत प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन एवं कृषि अभियांत्रिकी में इस जलागम क्षेत्र में किये गये कार्यों के लिए प्रतिष्ठित ''नानाजी देशमुख'' पुरस्कार दिया गया।

कार्यकम में गॉव के प्रगतिशील किसान श्री कोमल सिंह यादव, श्री कल्याण सिंह, श्री बाला राम ने अपने विचार व्यक्त किये तथा संस्थान द्वारा क्षेत्र में किये गये कृषिवानिकी आधारित जलागम कार्यों की सराहना करते हुए अवगत कराया कि अब उनके गॉव में संस्थान द्वारा दिये गये मार्गदर्शन से किसानों की सोच में परिवर्तन आया है तथा किसान एक–दूसरे से प्रेरित होकर कृषिवानिकी आधारित उन्नत तकनीकियॉ अपना रहे हैं। कार्यकम में संस्थान के अन्य वैज्ञानिक डा. नरेश कुमार, डा. आशा राम, डा. अशोक यादव एवं अन्य वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कार्यकम का संचालन डा. प्रियंका सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. आशा राम ने किया।

World Water Day

Tree-based Solutions for Moisture Retention

22 March, 2021